राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला में हिन्दी माध्यम से विज्ञान संगोष्ठी

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में दि. 8 सितम्बर से 14 सितम्बर, 2004 की अवधि में मनाए गए हिन्दी सप्ताह के एक भाग के रूप में पादप ऊतक संवर्धन प्रभाग द्वारा एक विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का विषय था- पादप ऊतक संवर्धन प्रभाग की वर्तमान अनुसंधान परियोजनाएँ । संगोष्ठी में कुल दस प्रतिभागियों ने अपने-अपने अनुसंधान कार्यों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए । विषय की दृष्टि से प्रस्तुत शोधपत्रों को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है । दो प्रस्तुतीकरण अंगूर की किस्मों-**रेड ग्लोब** तथा **इटालिया** के सूक्ष्म प्रवर्धन से सम्बन्धित थे । इनमें मुख्य रूप से यह बताया गया कि अंगूर की इन दो किस्मों की पौध पादप ऊतक संवर्धन तकनीक द्वारा किस तरह बड़ी संख्या में और कम समय में तैयार की जा सकती है । दूसरे वर्ग में तीन प्रस्तुतीकरण थे जिनका विषय था - पौधों में विशेष रूप से सुबबूल में विद्यमान लिग्निन किस तरह कागज बनाने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है तथा पौधों में लिग्निन की मात्रा को आनुवंशिक अभियांत्रिकी तकनीक द्वारा कम करके एक ओर कागज-उत्पादन की लागत में कमी लाई जा सकती है तो दूसरी ओर कागज-उद्योग से पर्यावरण में होने वाले प्रदूषण की मात्रा को भी कम किया जा सकता है । इसी वर्ग में अन्य दो प्रस्तुतियों में कोशिका भित्तीय पेरॉक्सीडेज़ एवं लिग्निनीकरण में उनकी भूमिका तथा आर.एन.ए. साइलेंसिंग पर शोध परिणाम प्रस्तुत किए गए । एक अन्य शोधपत्र का विषय था -आणविक चिह्नकों द्वारा सूबबूल की जैविक विविधता का आकलन । एक अन्य वर्ग में एक शोधपत्र का विषय था- "पादप जैवप्रौद्योगिकी तथा पादप द्वितीयक उपापचयज" । इसके अंतर्गत यह बताया गया कि पादप द्वितीयक उपापचयज कहाँ-कहाँ उपयोग में लाए जाते हैं, इनका उत्पादन कैसे होता है, ये कितने प्रकार के होते हैं और पौधों में ये किस तरह एक सुरक्षातंत्र का कार्य करते हैं ? चौथे और अन्तिम वर्ग में दो शोधपत्र प्रस्तुत किए गए जिनका मुख्य विषय था - जैवप्रौद्योगिकी किस तरह प्रदूषण को कम करने में सहायक बन सकती है । इस वर्ग में एक शोधपत्र का विषय था - मरकरी प्रतिरोधी जीन mer A तथा mer B का प्रतिजैविक जीन के विकल्प के रूप में प्रयोग तथा दूसरे शोधपत्र का विषय था - पादप उपचार(Phytoremediation) और धातु निर्विषीकरण (detoxication) करने की विभिन्न प्रक्रियाएँ ।

संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए सभी दस शोधपत्रों के सारांश की एक सार-पुस्तिका भी तैयार की गई । इस संगोष्ठी का उद्‌घाटन एवं सार-पुस्तिका का विमोचन प्रयोगशाला के कार्यवाहक निदेशक, डॉ. भास्कर कुलकर्णी ने किया । इस अवसर पर उन्होंने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हिन्दी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा के रूप में विकसित किया जाए । पादप ऊतक संवर्धन प्रभाग के कार्यवाहक प्रमुख डॉ. बशीर मोहम्मद खान ने संगोष्ठी के आयोजन की रूपरेखा पर प्रकाश डाला । प्रयोगशाला के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, डॉ. रमाशंकर व्यास ने इस अवसर पर हिन्दी सप्ताह आयोजन की प्रासंगिकता और विज्ञान में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग की अपरिहार्यता पर अपने विचार व्यक्त किए । संगोष्ठी की सम्पूर्ण कार्यवाही का संचालन पादप ऊतक संवर्धन प्रभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं संगोष्ठी के संयोजक डॉ. दिनेश चन्द्र अग्रवाल ने किया ।

---------x---------